P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सशक्त भारतीय विदेश नीति के लिए मालदीव में शांति जरूरी

प्रभप्रीत सिंह
शोध छात्र,
राजनीति शास्त्र विभाग,
पंजाब यूनीवर्सिटी,
चण्डीगढ़

स्वाती सोम
शोध छात्रा,
राजनीति शास्त्र विभाग,
सेंट्रल यूनीर्वसिटी ऑफ हरियाणा

सारांश

भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में मालदीव का अपना सामरिक महत्व है। दोनों ही देशों के संबंध में काफी पुराने समय से रहे हैं। मालदीव हिंद महासागर क्षेत्र के समुद्री गलियारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहां से भारत का सिक्योरिटी ग्रिड बी गुजरता है, देश में किसी भी प्रकार का बदलाव विशेषकर की राजनीतिक भारत से उसके संबंधों को सीधे रूप से प्रभावित करता है। हाल ही में हुए राजनीतिक घटनाक्रम भारत के सामरिक हितों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। मालदीव में बढ़ते हुए चीनी हस्तक्षेप और पैर पसारता इस्लामिक कट्टरपंथ, भारत और मालदीव के संबंधों में बाधा के रूप में सामने आ रहा है जिससे कि भारतीय हिंद महासागरीय विदेश नीति और भारत और मालदीव सामरिक संबंध दोनों ही अछूते नहीं रहे हैं। एक सुरक्षित और विकसित हिंद महासागरीय क्षेत्र के लिए भारत और मालदीव दोनों के ही अच्छे संबंध समय की मांग है,जिसके लिए मालदीव का राजनीतिक रूप से स्थाई होना और उसके साथ साथ भारत से बेहतर संबंध जरूरी है क्योंकि मालदीव का राजनीतिक वातावरण भारत के हितों को सीधे रूप से प्रभावित करता है

मुख्य शब्द : सामरिक हित, सिक्योरिटी ग्रेड, हिंद महासागर, नेबर फर्स्ट, कट्टरपंथी इस्लाम।

प्रस्तावना

विश्व भर में शांति के लिए भारत का इतिहास गवाह है जब भी दुनिया में वैश्विक शांति एवं सुरक्षा का सवाल आया भारत ने अपने हितों का त्याग करते हुए भी विश्व शांति के लिए अपना हरसंभव योगदान दिया है। इसीलिए आज भी भारत को संयुक्त राष्ट्र में शांति प्रिय देशों में गिना जाता है। यह भारतीय विदेश नीति की ऊर्जा का स्रोत रहा है कि विश्व में शांति बरकरार रहे, क्योंकि यह शांति दुनिया भर में समृद्धि लाने का काम करती है। आज हमारा पड़ोसी राष्ट्र मालदीव संकट के दौर से गुजर रहा है। भारत के हितों के लिए जरूरी है कि मालदीव में एक सशक्त सरकार साबित हो भारत की प्रमुख चिंता पड़ोस में पनपी अस्थिरता का भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास पर पड़ता राजनीतिक प्रभाव भी है। मालदीव संकट में चीन के निरंतर बढ़ते प्रभाव का भारत को प्रभावित करना स्वाभाविक ही है।

भारत के लिए मालदीव एक महत्वपूर्ण पड़ोसी देश है, पुरातन समय से ही दोनों देश, जातिय, भाषाई, सामाजिक एवं धार्मिक आधार पर जुड़े रहे हैं। इसी के साथ भारत मालदीव संबंधों की रूपरेखा को सांझा सामरिक, सुरक्षा, आर्थिक और विकासात्मक लक्ष्यों को बहुत मजबूत नींव पर बनाया गया है, भारत उन चुनिंदा देशों में से है जिसमें सबसे पहले मालदीव की आजादी को मान्यता दी थी। 1965 में भारत ने दक्षिण एशिया के इस छोटे से आईलैंड को एक आजाद एवं संप्रभुता राष्ट्र की मान्यता देकर इससे सामरिक संबंधों की शुरुआत की थी। मालदीव, लक्ष्यद्वीप श्रृंखला से सिर्फ 700 किलोमीटर और भारतीय मुख्य भूमि से कुछ बारह सौ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मालदीव को 'हिंद महासागर में एक महत्वपूर्ण भागीदार' कहा है। भारत और मालदीव के राजनीतिक एवं सामरिक हित आपस में जुड़े हुए हैं, दोनों देश कॉमन वेल्थ ऑफ नेशंस , सार्क जैसे महत्वपूर्ण दक्षिण एशिया संगठनों से भी जुड़े हुए हैं। भारत की मानव अधिकारों के प्रति वचनबद्धता की तरह ही मालदीव ने अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार संगठनों जैसे एमनेस्टी इंटरनेशनल और ह्यूमन राइट्स वॉच के साथ संवाद और सहयोग की सफलतापूर्वक स्थापना की है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में मालदीव के बदलते राजनीतिक समीकरणों पर एक विश्लेषण।

राजनीतिक संबंध

मालदीव को राष्ट्र के रूप में मान्यता मिलने के साथ ही भारत और मालदीव में राजनीतिक संबंध रहे हैं। कूटनीतिक संबंधों की शुरुआत के साथ ही दोनों देशों में निरंतर विभिन्न स्तर पर आपसी सहयोग बढ़ाने का निरंतर प्रयास होते रहे हैं। मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति महमूद मैमुन अब्दुल गयुम और पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद अपने कार्यकाल के दौरान कई बार भारतीय दौरे पर आए। 2014 में मालदीव के राष्ट्रपति अब्दुल नशीद ने अपना पहला विदेशी दौरा भारत का ही किया था। जनवरी 2014 में राष्ट्रपति नशीद विदेश दौरे पर भारत आए थे, इसी के साथ भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी अपने मई 2014 के शपथ ग्रहण समारोह में बुलाए सार्क देशों के मेहमानों में मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद अब्दुल गयूम को भी बुलाया था। अप्रैल 2016 में अपनी यात्रा के दौरान यामीन ने अपनी 'इंडिया ईस्ट पॉलिसी' दोहराई थी। इस दौरान दोनों देशों ने आपसी समझौते को बढ़ाते हुए रक्षा से काराधन तक के छह समझौतों पर हस्ताक्षर किए थे। भारत और मालदीव में उच्च क्षेत्रीय वार्ताओं का दौर निरंतर चलता रहा है। नवंबर 2014 और अक्टूबर 2015 में भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज मालदीव के दौरे पर गई थी। यूनाइटेड नेशन वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन के क्षेत्रीय मंत्री बैठक में भाग लेने केलिए केंद्रीय मंत्री डॉक्टर महेश शर्मा ने भी 2015 में मालदीव का महत्वपूर्ण दौरा किया था।

द्विपक्षीय सहायता

भारत ने अपने सहयोगी राष्ट्रों के सामूहिक विकास की वचनबद्धता के साथ मालदीव में कई संस्थानों की स्थापना की है। मई 2011 को मालदीव के दौरे पर गए भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भारत की की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के नाम पर मेमोरियल हॉस्पिटल का शिलान्यास किया था।भारत के सहयोग से ही मालदीव में इंदिरा गांधी मेमोरियल हॉस्पिटल, फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग और फैकल्टी ऑफ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म स्टडीज जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों का विकास हुआ है। यही नहीं भारत ने मालदीव की कठिन एवं कुदरती चुनौतियों को उसके साथ मिलकर लड़ा है। 26 दिसंबर 2014 को आई सुनामी के बाद मालदीव में सहायता पहुंचाने वाला पहला देश भारत ही था। साल 2007 में मालदीव में आए ज्वारीय अधिभार में भी भारत ने 100 मिलियन डॉलर से मालदीव की मदद की थी। इसी के साथ भारत, मालदीव की ''100 मिलियन डॉलर की स्टैंड–बाई क्रेडिट फैसिलिटी'' के साथ कई दीर्घकालिक ऋण और व्यापार के लिए परिक्रार्मी ऋण का कर रहा है। मालदीव के लिए भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित 40 लाख अमरीकी डॉलर की नई निवेश नीति के तहत, भारत के ओवरसीज इंफ्रास्ट्रक्चर एलाइंस (ओएसी) को मालदीव में 485 आवास इकाइयों के निर्माण के लिए एक अनुबंध दिया गया है। हिंद महासागर की समुद्री डाकुओं से सुरक्षा में मालदीव की बेहद महत्वपूर्ण भूमिका है। मालदीव की समुद्री सुरक्षा संबंधी क्षमता के विस्तार के लिए भारत ने वहां 'नेशनल पुलिस एकेडमी' बनाने में भी अपना योगदान देना शुरू कर किया है।

क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण

मालदीव को भारत की सहायता के प्रमुख घटकों में से एक घटक क्षमता निर्माण और कौशल विकास भी है। भारत निम्नलिखित योजनाओं के तहत मालदीव के छात्रों को आईसीएसएसआर छात्रवृत्ति, सार्क अध्यक्ष फैलोशिप, आईटीईसी प्रशिक्षण और छात्रवृत्ति, कोलंबो योजना की तकनीकी सहयोग योजना और मेडिकल छात्रवृत्तियाँ जैसे कई छात्रवृत्ति प्रदान करता है। इसी के साथ मालदीव के कई राजनयिकों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने भी भारतीय विदेश सेवा संस्थान के विदेशी डिप्लोमेट्स कार्यक्रम (पीसीएफबी) के लिए व्यवसायिक पाठ्यक्रम के तहत भारत में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। भारत सरकार ने मालदीव में शिक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी दत्तक कार्यक्रम के लिए 5.30 मिलीयन डॉलर परियोजना का वित्तपोषण किया है। एनआईआईटी और ईईसी (भारत) द्वारा चलाए गए इस प्रोजेक्ट में 27 महीने की अवधि (2011–13) के दौरान कम्प्यूटर कौशल में लगभग 5000 से भी अधिक मालदीव के युवाओं को प्रशिक्षित किया है।

आर्थिक संबंध

1981 में आवश्यक वस्तुओं के निर्यात के लिए व्यापार समझौते पर भारत और मालदीव ने हस्ताक्षर किए हैं। दिसंबर 2015 की रिपोर्ट के अनुसार भारत–मालदीव का द्विपक्षीय व्यापार अब करीब 700 करोड रुपए है। मालदीव में भारतीय निर्यात में कृषि और मुर्गी उत्पादन, चीनी, फलों, सब्जियाँ, मसाले, चावल, गेहूं का आटा जैसी मूलभूत वस्तुएं शामिल है। इसके साथ ही भारत मालदीव को वस्त्र और दवाइयां और विभिन्न प्रकार की इंजीनियरिंग और औद्योगिक एवं निर्माण के लिए रेत, सीमेंट उत्पादों आदि का भी निर्यात करता है। आयात की दृष्टि से भारत मुख्य रूप से मालदीव से धातुओ का स्क्रैप आयात करता है।

मालदीव में भारतीय व्यापार

भारतीय व्यापार की दृष्टि से मालदीव बेहद महत्वपूर्ण स्थान रखता है, मालदीव हिंद महासागर में पड़ोसी होने के नाते भारतीय हित को प्रभावित करता है। हिंद महासागर क्षेत्र 40 से अधिक राज्यों की मेजबानी करता है और दुनिया की आबादी का लगभग 40% हिस्सा इसी महासागर पर निवास करता है। हिंद महासागर ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया, पश्चिम एशिया और अफ्रीका के पूर्वी समुद्र मोड को छूता है। हिंद महासागर में भारत के लिए मालदीव एक बेहद महत्वपूर्ण देश है। भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का 97% हिस्सा हिंद महासागर के माध्यम से ही होकर गुजरता है। भारत के लिए इस समुद्री गलियारे का सुरक्षित होना महत्वपूर्ण है। भारतीय स्टेट बैंक मालदीव के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। फरवरी, 1974 से ही भारतीय स्टेट बैंक मालदीव में द्वीप रिजॉर्ट को बढ़ावा देने, समुंदरी उत्पादों को निर्यात और व्यवसायिक उद्यमों के लिए कर्ज सहायता प्रदान कर रहा है। ताज ग्रुप ऑफ इंडिया मालदीव में 2 रिजॉर्ट 'ताज एग्जॉटिका रिजॉर्ट

एंड स्पा' और 'विवंत कोरल रीफ रिसोर्ट' चलाता है। टाटा हाउसिंग जैसी कई अन्य अग्रणी कंपनियां भी मालदीव में मौजूद हैं।

इसी के साथ लोगों को आपस में जोड़ने के लिए एयर इंडिया तिरुवनंतपुरम, बेंगलुरु और चेन्नई से मालदीव की राजधानी माले के लिए दैनिक उड़ान संचालित करती है। मालदीव एरो द्वीप विमानन सेवा तिरुवनंतपुरम के लिए दैनिक और चेन्नई (1 हफ्ते में तीन बार) उड़ान संचालित कर रही है। हाल के वर्षों में कनेक्टिविटी और पर्यटन के लिए निकटता के कारण मालदीव जाने वाले भारतीयों की संख्या में (45000 के आसपास) और द्विपक्षीय व्यापार में काफी वृद्धि की है। भारत शिक्षा, चिकित्सा, उपचार, मनोरंजन और व्यापार के लिये मालदीव के लिये एक पसंदीदा स्थान है। भारत में उच्चतर अध्ययन, चिकित्सा उपचार के लिए दीर्घकालिक वीजा मांगने वाले मालदीव निवासियों की संख्या पिछले वर्षों में तेजी से बढ़ी है।

भारतीय प्रवासी एवं सांस्कृतिक संबंध

मालदीव में दूसरा सबसे बड़ा आबादी वाला समुदाय लगभग 22,000 के करीब भारतीयों का है। भारतीय प्रवासी समुदाय में कार्यकर्ताओं के साथ–साथ चिकित्सकों, शिक्षकों, अकाउंटेंट, इंजीनियरों, नर्स और तकनीशियन जैसे पेशेवर मालदीव के कई द्वीपों में निवास करते हैं । देश के लगभग 400 डॉक्टर में से 125 से अधिक भारतीय हैं, इस तरह मालदीव में लगभग 25% शिक्षक अधिकतर मध्यम और वरिष्ठ स्तर पर भारतीय समुदाय से ही हैं।

दोनों देश लंबी सांस्कृतिक विरासत सांझा करते हैं और इन संबंधों को और मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। तीन ऐतिहासिक मस्जिदों (शुक्रवार मस्जिद और धारूमहावनथा राजफानू मस्जिद, फेंसुगी मस्जिद को लखनऊ से भारतीय विशेषज्ञों द्वारा सफलता पूर्ण बहाल किया गया है। दोनों देशों के बीच संस्कृतिक मंडल का आदान–प्रदान नियमित रूप से होता है। मालदीव में हिंदी फिल्म, टीवी धारावाहिकों और भारतीय संगीत बेहद लोकप्रिय है। भारतीय संस्कृतिक केंद्र (आईसीसी), योग, शास्त्रीय संगीत और नृत्य में नियमित पाठ्यक्रम आयोजित करता है। आईसीसी कार्यक्रम सभी उम्र के मालदीव नागरिकों में बेहद लोकप्रिय है।

आज का मालदीव संकट

मालदीव में राजनीतिक अस्थिरता का लंबा इतिहास रहा है। पूर्व राष्ट्रपति गयूम और नशीद के बाद से लगातार मालदीव घरेलू राजनीतिक उलझनो में फंसा हुआ है। 1 फरवरी 2018 को मालदीव में हुए नए राजनीतिक संकट ने सरकार और लोगों के साथ साथ विश्व जगत का ध्यान अपनी ओर केंद्रित किया है। मालदीव का नवीनतम राजनीतिक संकट, राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन और मालदीव के सर्वोच्च न्यायालय के एक सर्वसम्मत फैसले के बीच एक गतिरोध की परिणिति है, मालदीव के 5 सदस्य सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया है, कि पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद सहित 9 राजनीतिक कैदियों को मुक्त कर देना चाहिए। इसके अलावा, न्यायालय ने निर्देश दिया है कि संसद के जिन 12 सदस्यों को राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन द्वारा अपने पद से हटा दिया गया था, तुरंत बहाल किया जाना चाहिए। इसी के साथ न्यायालय ने निर्देश दिया है कि संसद का नया सत्र 5 फरवरी 2018 को इन 12 सदस्यों की भागीदारी के साथ बुलाया जाना चाहिए। नशीद और उनके मालदीव डेमोक्रेटिक पार्टी (MDP) ने और साथ ही विपक्षी गठबंधन के सभी सदस्यों ने इस फैसले का गर्मजोशी से स्वागत किया था। उन्होंने कहा कि इस फैसले के साथ, यामीन ने सभी विश्वसनीयता खो दी है और उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए। हालांकि उन्होंने गंभीर शंका व्यक्त की, कि यामीन न्याय का पालन नहीं करेंगे। दुनिया भर के महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, भारत, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा आदि के महासचिव सहित अंतरराष्ट्रीय समुदाय के एक बड़े खंड द्वारा सुप्रीम कोर्ट के फैसले के लिए व्यापक समर्थन और स्वागत किया गया है।

हालांकि मालदीव के सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बावजूद यामीन के प्रशासन ने तर्क दिया कि सत्तारूढ़ के लिए यह फैसला लागू करना संभव नहीं है। क्योंकि यह फैसला देश में एक गंभीर कानून और व्यवस्था की स्थिति पैदा करेगा। मालदीव सरकार का मानना है कि सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला सरकार के तख्तापलट करने का प्रयास है। राष्ट्रपति यामीन ने 15 दिनों के लिए आपातकाल की घोषणा की और मुख्य न्यायधीश और सर्वोच्च न्यायालय के एक वरिष्ठ न्यायाधीश और साथ ही अपने स्वयं का अर्ध–भाई गयुम जो कि पहले राष्ट्रपति थे, गिरफ्तार कर लिया है, जिन्होंने 1967 से 2007 तक शासन किया था और अब विपक्ष का समर्थन कर रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 6 फरवरी को यामीन की सुरक्षा बलों और एजेंसियों द्वारा नियुक्त खतरे के परिणाम स्वरुप सुप्रीम कोर्ट के शेष तीन सदस्यों ने, नौ गिरफ्तार राजनीतिक कैदियों को मुक्त करने के अपने पहले निर्णय को उलट दिया। इससे मालदीव में निराशा और तनाव का माहौल पसरा है।इन सभी घटनाओं का सीधा संबंध मालदीव में अगली सरकार की स्थापना से जुड़ा हुआ है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले से पहले इस साल के अंत में राष्ट्रपति चुनाव का कड़ा विरोध हो सकता है।

भारत और मालदीव संबंध में चीन एक बड़ी चुनौती के रूप में

बेशक भारत और मालदीव पुराने सांस्कृतिक संबंधों के नाते आपस से जुड़े रहे हैं। लेकिन 2013 में अब्दुल्ला यामीन के राष्ट्रपति पद पर काबिज होने के बाद दोनों देशों के रिश्तो में उतार–चढ़ाव देखने को मिला है। मौजूदा राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन को चीन का करीबी माना जाता है। दिसंबर 2017 में मालदीव और चीन के बीच 'फ्री ट्रेड एग्रीमेंट' पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यह बात है गौर करने योग्य कि पाकिस्तान के बाद मालदीव एशिया में दूसरा ऐसा देश है, जिसके साथ चीन ने यह एग्रीमेंट किया है। चीन ने मालदीव के साथ 'मैरिटाइम सिल्क रूट' से जुड़े एमओयू भी हस्ताक्षर किए हैं। और दोनों देश के बीच वन बेल्ट वन रोड परियोजना के संदर्भ में चर्चाएं भी हुई है। पर दूसरी तरफ चीन इन्हीं मुद्दों पर भारत के साथ वार्ता करने के लिए भी चुप्पी साधे हुए हैं।

मालदीव के कुल अंतरराष्ट्रीय कर्ज में करीब दो–तिहाई हिस्सेदारी अकेले चीन की है। इतना ही नहीं मालदीव की राजधानी, माले में एयरपोर्ट बनाने का ठेका भी आजकल चीन की ही एक कंपनी के पास है ,जोकि पहले भारतीय कंपनी को मिला हुआ था और रद्द करके चीन की एक कंपनी को दे दिया गया है। हालांकि भारत और मालदीव एक दूसरे के काफी करीबी रहे हैं, पर हाल के वर्षों में मालदीव का चीन के प्रति झुकाव सामने आ रहा है।2012 मैं सैन्य तख्तापलट में मालदीव के प्रथम निर्वाचित राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद को सत्ता से बेदखल कर दिया गया था।उसी के बाद से चीन के मालदीव में आक्रमक रणनीति के साथ मालदीव में भारी निवेश किया तथा भारी मात्रा में कर्ज भी उपलब्ध करवाया। मालदीव में घटित कुछ घटनाएं, जैसे वहां के एक सरकार समर्थक अखबार की भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की आलोचना करना और भारत को दुश्मन देश बताना, भारतीय मालदीव संबंधों में एक दूरी का एहसास कराता है।

निष्कर्ष

विश्व पटल पर शांति और समृद्धि के लिए एवं खुद भारत की सुरक्षा और विकास के लिए हिंद महासागर में शांति होना बेहद जरूरी है। मालदीव और चीन में गहरी होती दोस्ती और विभिन्न प्रोजेक्ट्स में दोनों का भागीदार होना भारत के लिए चिंता का विषय है।चीन ने मालदीव के कई द्वीपों को भी किराए पर ले रखा है, जिसका प्रयोग भारत को घेरने के लिए 'स्ट्रिंग ऑफ प्लस' नीति के तहत किया जा सकता है। इतना ही नहीं मालदीव हिंद महासागर में भारत के सिक्योरिटी ग्रिड का हिस्सा है। हिंद महासागर में स्थित मालदीव के द्वीपों पर लगाए गए रडार सागर की सुरक्षा एवं निगरानी करते हैं, तथा जिसकी जानकारियां इन्हीं द्वीपों से गुजरकर, नई दिल्ली स्थित केंद्रीय कंट्रोल रूम तक पहुंचती है।इसके साथ ही मालदीव में अगर कट्टरपंथी इस्लाम अपने पैर पसारने में कामयाब हो जाता है तो हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा के संदर्भ में बड़े संकट उत्पन्न हो सकते हैं।इन सभी महत्वपूर्ण आयामों को देखते हुए भारत को बेहतर एवं चौकस रणनीति अपनाते हुए, अपने रिश्ते मालदीव से और मजबूत करने होंगे। यह 'नेबर फर्स्ट पॉलिसी' को ध्यान में रखते हुए काम करने का समय है जितना मालदीव भारत के लिए महत्वपूर्ण है उससे कहीं ज्यादा भारत मालदीव के लिए महत्वपूर्ण है। विश्व पटल पर भारत की बढ़ती ताकत को मालदीव भी नजरअंदाज नहीं कर सकता। भारत मालदीव का एक मददगार पड़ोसी रहा है, अपने सुरक्षा और विकास के लिए मालदीव को भारत की अत्यधिक आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Devin T- Hagerty ¼2005½ SouthAsia in World Politics- RowmanAnd Littlefield- pp- 102–103- ISBN 0&7425&2587&2-*
2. *"Action plan to strengthen bilateral ties with Maldives"- The Hindu Business Line- Retrieved 5 June 2008-*
3. *"India bringing Maldives into its security net & Indian EÛpress"- Www-indianeÛpress-com- Retrieved 2016&03&27-*
4. *"Maldives Water Crisis: India Transports 1]000 Tonnes of Fresh Water to Male"- NDTV- 7 December 2014- Retrieved 21 December 2014-*
5. *"Maldives Faces Drinking Water Crisis"- The Diplomat- 5 December 2014- Retrieved 21 December 2014-*
6. *"MaldivesAppreciative of India's help during its water crisis: Shahare"- Business Standard- 6 December 2014- Retrieved 21 December 2014-*
7. *"U-S-] India concerned over 13&year jail sentence for Maldives' eÛ&president Nasheed"- Reuters- 2015&03&14- Retrieved 2016&03&27-*
8. *"PM Modi cancels trip to Maldives: Is it because of Yameen govt's rebuttal in Nasheed case\ & Firstpost"- Firstpost- Retrieved 2016&03&27-*
9. *"PM drops Maldives from Indian Ocean tour"- The Hindu- 2015&03&06- ISSN 0971&751X- Retrieved 2016&03&27-*
10. *"Prime Minister Narendra Modi cancels Maldives trip due to political unrest"- Times of india&economic times- Retrieved 2016&03&27-*
11. *"Maldives] Sri LankaAnd the "India Factor""- Himal SouthAsia Magazine-Archived from the original on 29 May 2008 5 June 2018-*
12. *Situation in Maldivesß- www-mea-gov-in- Retrived on 2017&12&28*
13. *The Maldivian Crisis: What Can India do\ ] www-idsa-in] Retrived on 2018&02&28*